यह ... व्यावहारिक
* ऐसे ज्ञान या सत्य है जिनकी व्यावहारिक
* जीवन में अब तक कोई उपयोगिता नहीं। गणितीय
* हुई हो परन्तु क्या फलवाद के इस सिद्धांत के आधार पर विज्ञान और गणित के उन सत्यों को असत्य मान लेना सही है क्योंकि सैद्धांतिक ज्ञान का भी हो महत्व है सैद्धांतिक ज्ञान ही व्यावहारिक क्षेत्र में समय विशेष पर प्रयुक्त होते हैं इन सिद्धांतों की उपयोगिता बाद में प्रकट होती है। अतः कहा जा सकता है कि फलवाद में उपयोगिता को सत्य की कसौटी के रूप में माना जा सकता है केवल उपयोगिता के आधार पर सत्य को परिभाषित नहीं किया जा सकता।

6 -

1) सत्य के तथ्यों सत्यता संबंधी दावा - अर्थक्रियावादी कहते हैं कि सत्य सत्य संबंधी दावा है तो सत्य और झूठ में किस प्रकार अन्तर कर सकते हैं क्योंकि झूठ भी तो सदैव सत्य का दावा करते हैं।

2) रसल की आलोचना - रसल के अनुसार कुछ सत्य केवल संभव होते हैं और उनकी उपयोगिता नहीं होती। इसलिए यदि सत्य और उपयोगिता को समानार्थी माना जाय जैसा कि जेम्स कहते हैं तो इसके विरोध में यह कहा जा सकता है कि बहुत से उपयोगी असत्य सत्य नहीं कहे जा सकते और बहुत से सत्य उपयोगी नहीं होते। अतः यह अतार्किक व्याख्या है।

3) आत्मनिष्ठता - अर्थक्रियावादी सत्य को परिवर्तनशील, सापेक्ष और अस्थायी कहकर परिभाषित करते हैं, इसलिए सत्य की अवधारणा आत्मनिष्ठ हो जाती है क्योंकि जब सत्य परिस्थिति व्यक्ति समय विशेष के परिपेक्ष्य में परिवर्तित होता रहता है तो जो सत्य भिन्न परिस्थिति में भिन्न व्यक्ति के लिए भिन्न सन्दर्भ में सत्य है वही दूसरे व्यक्ति के लिए दूसरी परिस्थितियों और सन्दर्भ में असत्य हो सकता है अतः सत्य आत्मनिष्ठ बन कर जाता है।

4) सफलता और उपयोगिता सत्यता का आधार नहीं - उपयोगिता और सफलता को मानते हैं, परन्तु यह वैज्ञानिक दृष्टि से स्वीकार करने योग्य नहीं है क्योंकि कभी-कभी गलत विश्वास और अन्धविश्वास भी सफलता के माध्यम सिद्ध होते हैं तो क्या उन्हें सत्य मान लिया जायेगा?

उन्होंने गणित के सत्यों में स्थापित करने का प्रयास, परन्तु जेम्स की इस समझौतावादी प्रवृत्ति के विरुद्ध शिलर ने और डीवी ने भी अनिवार्य और सार्वभौम सत्य को बिलकुल ही नहीं स्वीकार किया है। जेम्स के गणित के अनिवार्य सत्य को चुनौती देते हुए शिलर ने बताया कि विज्ञान और गणित के सत्य भी सापेक्ष और अस्थायी होते हैं जैसे 2+2=4 तभी सत्य होगा जब वस्तुओं का अलग-अलग अस्तित्व होगा यदि वस्तुओं का अलग-अलग अस्तित्व नहीं होगा तो 2+2= नहीं होगा। जैसे पानी के दो बूंद और पुनः दो बूंद को एक ही स्थान पर गिराएं तो एक बूंद रहेगा। ऐसा ही रबर और दो वस्तुएँ एक ही स्थान पर रहें तो इकाई ही बचेगी। इसका अर्थ यह है कि सत्य अनिवार्य और निरपेक्षता या स्थायी नहीं होता। सत्य मानवीय अर्थों पर निर्भर रहता है अर्थात सत्य सापेक्षिक होता है।

समीक्षा- अर्थक्रियावादी सत्य के सिद्धांत की अनेक विचारकों द्वारा बहुत अधिक आलोचना की गई है। ब्रैडले, मूर, रसेल आदि अन्य आलोचकों ने इस सिद्धांत के विरोध में बहुत कुछ कहा है। अर्थात अर्थक्रियावादी सत्य के सिद्धांत में यह गुण तो है कि यह किसी ज्ञान की सत्यता इसके व्यावहारिक परिणामों को ध्यान रखकर निर्धारित करता है। साथ इसका यह मत भी ठीक है कि ज्ञान की सत्यता किसी नियम और परिस्थिति विशेष से निर्धारित होनी चाहिए परन्तु ज्ञान की सत्यता की कसौटी के निर्धारित करने में अर्थक्रियावादी अधिक आत्मनिष्ठ हो जाते हैं। इसलिए ज्ञान का प्रामाणिक आधार नहीं रह जाता। इस सिद्धांत में निम्नांकित दोष बतलाए जा सकते

सत्यता संबंधी दावा होता है। व्यवहार द्वारा उस सत्यता दावा का मूल्यांकन होता है अर्थात जो विचार व्यवहार की कसौटी से मूल्यवान सिद्ध होता है, फलदायक होता है वह सत्य बन जाता है और जो व्यवहार में असंतोषप्रद या फलदायक नहीं होता वह असत्य होता है। इस कसौटी से शिलर के अनुसार भी सत्य मानव निर्मित होता है। इससे यह अर्थ भी निकलता है कि मनुष्य सत्य का निर्माण करता है। सत्य कोई स्थायी तत्व नहीं है। सत्य का निर्माण नए-नए तरीकों से होता है।

2) सत्य और उपयोगिता समानार्थी नहीं है - शिलर ने सत्य और उपयोगिता के मध्य अन्तर स्थापित किया है। इस संबंध में शिलर जेम्स से भिन्न मत रखते हैं। जेम्स ने कहा कि वह उपयोगी है क्योंकि सत्य है या सत्य है क्योंकि उपयोगी है अर्थात सत्य और उपयोगिता समानार्थी है किन्तु शिलर का जेम्स से मतभेद है इसलिए शिलर ने कहा कि यह सत्य की परिभाषा नहीं है दोनों में तादात्म्य संबंध नहीं है क्योंकि कुछ उपयोगी वस्तुएं सत्य नहीं है यद्यपि सभी वस्तुएं जो सत्य है उपयोगी है।

* प्रश्न होता है कि क्या जेम्स और शिलर के विचारों में समन्वय हो सकता है।

3) शिलर के अनुसार सार्वभौम और निरपेक्ष सत्य का अस्तित्व नहीं है - वैसे तो सभी प्रत्ययवादी सार्वभौम और निरपेक्ष सत्य का अस्तित्व स्वीकार नहीं करते परन्तु जब यह प्रश्न होता है कि क्या संसार में शाश्वत और सार्वभौम सत्य बिल्कुल ही नहीं होता? जेम्स ने सापेक्षतावादी मत अपनाया है। इन्होंने